20-8-68 ओम शान्तिः प्रातःक्लास

अब यह तो बच्चे अच्छी रीती समझ गये है कि अब बाप आय है पावन बनने का रास्ता बताने। उनको बुलाया जाता ही है एक बात के लिय कि हमको पतित से पावन बनाओ। क्योंकि पावन दुनियां पास्ट हो गई है। अभी पतित दुनियां है। पावन दुनियां कब पास्ट हुई, कितना समय हुआ यह कोई भी नही जानते है। तुम बच्चे ही जानते हो कि बाप फिर से इस तन मे आया हुआ है। तुमने ही बुलाया है कि बाबा आकर हम पतितो को पावन बनाओ कि हम पावन कैसे बने। यह तो जानते हो कि हम पावन दुनियां मे थे। अभी पतित दुनियां मे है। अभी यह दुनियां बदल रही है। नई दुनियां की आयु कितनी है पुरानी की कितनी है यह कोई भी नही जानते है। पक्का मकान बनाते है तो कहते है कि इनकी आयु इतनी होगी। कच्चा मकान बनावेंगे तो कहेंगे कि इनकी आयु तो इतनी ही होगी। समझ सकते है कि यह कितने वर्षो तक चल सकता है। मनुष्यों को तो यह पता ही नही है कि यह जो सारी दुनियां है इनकी आयु कितनी है। तो जरूर बाप को ही आकर बताना पडे। बाप कहते है बच्चे अभी यह पुरानी पतित दुनियां पुरी होगी। नई पावन दुनियां स्थापन हो रही है। नई दुनियां मे बहुत थोडे मनुष्य थे। नई दुनियां है ही सतयुग। उसको सुखधाम कहा जाता है। इस दुःखधाम का अन्त तो जरूर आना ही है। फिर सुखधाम भी मस्ट रिपीट होना है। सबको यह समझाने का है कि बाप डायरेक्शनस देते है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। और फिर दूसरो को भी यह रास्ता बताओ। लौकिक बाप को तो सब जानते है। पारलौकिक बाप को कोई जानते नही है। सर्वव्यापी कह देते है। कछ-अवतार मछ अवतार कह देते है। यां तो 84 लाख योनियों मे ले जाते है। दुनियां मे कोई भी बाप को जानते नही है। बाप को जाने तब समझे। भित्तर ठिक्कर मे परमात्मा है तो वर्से की बात ही नही ठहरती है। पुजा भी करते है। देवताओं की भी पुजा करते है। परन्तु कोई का भी आक्पेशन नही जानते है। बिलकुल ही इनबातो से बेवाकुफ है। तो पहले-2 मूल बात समझानी चाहिये। सिर्फ चित्रो से ही कोई भी समझ न नही सकेंगे। मनुष्य तो बिचारे ना बाप को जानते है नां ही रचना को जानते है। शुरू से लेकर यह रचना कैसे रची देवी देवताओं का राज्य था कब था जिनको पूजते है? कुछ भी पता नही है, यह सब समझते है कि लाखो सतयुग के है। राम-सीता आद त्रेता के चन्द्रवंशी है। सिर्फ यही पता नही है कि कितना समय उनकी राजधानी चली है। समझते है कि लाखो वर्ष सूर्यवंशी लाखो वर्ष चन्द्रवंशी राजधानी चली है। इसको कहा जाता है अज्ञान अब तुम बच्चो को बाप ने समझाया है। तुम फिर रिपीट करते हो बाप भी रिपीट करते रहते है। ऐसे-2 समझाओ। पैगाम दो। नही तो राजधानी ही कैसे स्थापन होगी। यहां पर ही बैठ जाने से तो नही होगी। हां घर मे बैठने वाले भी चाहिये नां वो तो ड्रामा अनुसार बैठे ही है। यज्ञ की सम्भाल करने वाले भी तो चाहिये नां चाहिये नां। बाप के पास कितने बच्चे आते है मिलने के लिये। क्योंकि शिव बाबा से ही वर्सा लेना है। लौकिक बाप के पास बच्चा आया और वो समझता है कि हमको वर्सा लेना है। बच्ची तो जाकर भी हाफ पार्टनर ही बनती है। सतयुग मे तो कब भी मिलकियत आद पर झगडा होता ही नही है। झगडा तो होता है काम विकार पर। वहां पर तो यह पांच भूत होते ही नही। तो दुःख का भी नाम निशान नही। सब नष्टोमोहा होते है। यह तो समझते है कि स्वर्ग था। जो कि पास्ट हो गया है। चित्र भी है परन्तु यह खयाल तो अभी तुम बच्चो को ही आती है। तुम जानते हो कि यह चक्र हर 5000 वर्ष बाद फिरता ही रहता है। आधा कल्प तो तो देवी देवताओं का राज्य था। सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राज्य था। शास्त्रो मे कोई यह थोडे ही लिखा है कि सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी 1250-1250 वर्ष चली है। किसी भी शास्त्र मे नही है। कल अखबार मे पडा था कि बडोदा के राजभवन मे रामायण सुन रहे है। कुछ भी आफते आती है तो मनुष्य भक्ति मे लग जाते है। भगवान को राजी करने के लिये। ऐसे भगवान कोई राजी होता नही है। यह ड्रामा मेनूंध है। भक्ति से कब भगवान राजी नही होता है। तुम बच्चे जानते हो कि आधा कल्प भक्ति चलती है। खुद ही दुःख उठाते रहते है। भक्ति करते-2 सब पैसे खलास कर दिये है। गुरुओ ने भी खूब लूट मार करके सब खलास कर दिया है।

उनको यह तो पता ही नही है कि हमारा सतगुरु कौन है। समझते है कि यह भी ब, कुः कुनिकली है जो कि ह हमसेपैसे लेते है यह करते है। आपोजीशन तो बहुत होता है। गुरु लोग भी सबको लूटते है। लूट-2 कर कितने शाहुकार बन जाते है। ऐस तो नही है कि कोई उनके फलोर्वस शाहुकार होते है। जैसे शिवानन्द था बहुत शाहुका था। सारी कारोबार तो उनके ही नाम पर चलती थी। कितने करोडो रुपये है। तो समझते है कि यहां पर यह प्रजापिता ब्रहमा कुमारियां क्या करती है। पैसे किनके पास है? जरुर ब्रहमा के पास होगें। शिव बाबा के पास तो कुछ होता ही नही है। यह ब्रहमा ने युक्ति रची हैजरुर पैसे इकठे किसे होगे। बस। और तो कुछ भी समझते ही नही है। कोई विरले ही समझने वाले निकलेगे। जो सर्विस पर बच्चेहै वो समाचार भी देते रहते है। समझाया जाता है कि यह तो ईश्वरिय परिवार है। ईश्वर तो दाता है। वो लेने वाला नही उनको कोई भी देते नही है। और ही पैसे सब बरबाद करते रहते है। बाबा तुम बच्चो से पूछते है कि तुमको कितने अथाह पैसे दिये तुमको स्वर्ग का मालिक बनाया, फिर वो सब कहां पर गया। इतने कंगाल कैसे बने। अभी फिर मै आया हुआ हूं। तुम कितने पदमापदमभाग्यशाली बन रहे हो। मनुष्य तो इन बातो को कुछ भी नही समझते है। तुम जानते हो कि अब इस पुरानी दुनियां मे यहां पर रहना नही है। यह तो दुनियां ही खलास हो जानी है। मनुष्योके पास तो ढेर के ढेर पैसे है। पैस तो कोई के भी हाथ आने नही है। विनाश होगा, सब खलास हो जावेगा। कितने भी भीलो मे बडे-2 मकान बने हुये है। ढेर के ढेर हैसब खत्म हो जावेगें। क्योकि तुम जानते हो कि हमारा जब राज्य था तो और कोई नही था। यहां पर तो अथाह धन था। तुम आगे चल कर देखते रहोगे कि क्या-2 होता रहता है। इसके पास कितना सोना कितनी चांदी कितने नोट आद है। वो सब बजट निकालते है। एलाउंस करते है कि इतना बजट है। इतना खर्च चाहिये। बारुद पर कितना खर्चा है। उसकी आमदनी तो कुछ भी है नही। यह रखने की चीज तो नही है। रखने का तो होता है सोना, चादी। दुनियां गोल्डनऐज है तो सोने के सिक्के होते है। सिल्वरऐज मे चांदी के। वहां पर तो सोना चादीअपार होता है। फिर कम होते-2 अभी तो देखो क्या निकाला है। कागज के नोट। विलायत मे भी कागज के निकले है। कागज तो काम की चीज नही है। बाकी क्या रहेगा यह बडी बिलडिंग्स आद तो खलास हो जावेगी। इसलिये ही बाप कहते है कि मीठे-2 बच्चोयह जो कुछ भी देखते हो तो ऐस समझो कि यह कुछ भी है नही। यह तो सब खलास हो जाना है। शरिर भी पुराना है। इनकी सजावट करने की तो दरकार ही रनही। तुम ने तो अब वानप्रस्थ मे जाना है। यह तो शरीर पुराना वयनाटपेनी है। यह दुनियां ही बाकी आठ वर्ष की है। 6-7 वर्ष भी हो तो ठिकाना थोडे ही है। बैठे-2 ही मनुष्यों को क्या हो जाता है। आज समाचार आया कि फलानी को अरधान्ग हो गया है हास्पिटल मे पडी हुई है। बैठे ही हार्टफेल हो जाता है। इस पुरानी दुनियां मे तो कोई पर भी भरोसा नही है। सतयुग मे तो थोडे ही ऐस होगा। वहां तो काया कल्पवृक्ष समान होती है योगबल से। अब तुम बच्चो को तो बाप मिला है। कहते है कि इस दुनियां मे तो तुमको रहना ही नही है। यह छी-2 दुनियां है। अभी तुमको योगबल से अपना श्रंगार करना है। वहां पर तो बच्चे भी योगबल से होते है। विकार की बात वहां हो नही सकती है। रावण राज्य ही नही। योगबल से तो तुम सारी दुनियां को ही पावन बनाते हो तो बाकी और क्या बाते है। इन बातो को भी वो ही समझेगें जो कि अपने ही घराने के होगे। नां समझते है तो समझना चाहिये कि हमारे घराने का नही है। सतयुग मे तो आवेगे नही। बाकी सभोको शान्तिःधाम मे जाना है। वो तो है घरपरन्तु मनुष्य तो पत्थर बुधी होने कारण उसको घर भी नही समझते है। वो तो समझते है कि एक आत्मोय जाती रहती है दूसरी आती रहती है। सृष्टी वृधी को पाती रहती है। रचता और रचना की आः मः अः को कुछ भी जानते नही है। तुम जानते हो इसीलिये ही कोशश करते हो औरो को समझाने लियेकि यह भी समझ कर बाबा का बन जावे। बाबा का बन जावे तो सब कुछ जान जावे। खुशी मे आ जावे। हम तो अब अमरलोक मे जाते है अमरकथा सुन रहे है। आधा कल्प तो हमने झूठी ही

कथायें सुनी है। अब तो बहुत खुश होना चाहिये। अमरलोक मे हम जावेंगे। इसमृत्युलोक को तो अभी [illegible] है। हम खुशी का खजाना यहां से भर कर जाते है। तो इस कमाई करने मे झोली भरने मे अच्छी रीती लग जाना चाहिये। समय वेस्ट नही करना चाहिये। बस अब तो हमको औरो की ही सर्विस करनी है। झोली भरनी है। बाप सिखाते है कि रहमदिल कैसे बनो। अन्धो की लाठीबनो। बाप और वर्से को कोई भी नही जानते है। मनुष्य ही तो जानेंगे नां। इसलिये हीबाबा ने प्रशनावली बनाई थी कि अभी स्वर्ग है वा नर्क है? तुम मनुष्यो से पूछते तो हो परन्तु कुछ भी समझते नही है। यह सवाल कोई भी सन्यासी विदवान आद तो पूछ भी नही सकता। उनको क्या पता कि स्वर्ग कहां होता है नर्क कहां होता है? तो इडियटस ठहरे नां। बिलकुल ही बन्दरबुधी है। तुम जानते हो कि सब अन्धे की औलाद अन्धे ही है। बिलकुल ही घोर अन्धेरे मे है। भल कितने भी बडी-2 पोजीशन वाले है। कमाण्डरइनचीफ ऐरोप्लेन के है, कमाण्डर लडाई के है, परन्तु तुम्हारे आगे तो यह क्या है। तुम जानते हो कि बाकी थोडा समय है। स्वर्ग का तो कोई को पता ही नही है। इस समय तो सभी तरफ मौत ही मौत है। सब तरफ मारा मारी चल रही है। खौफनाक मारी मारी है। फिर इनको तोपो लश्करप्लेन्स आद की क्या दरकार होगी? नही। यह सब खलास हो जावेगा बाकी थोडे मनुष्य बचेंगे। यह ऐरोप्लेन आद तो रहेंगे परन्तु दुनियां कितनी छोटी होगी। भारत हो रहेगा। तुम बच्चो के सिवाय और कोई की भी बुधी मे नही है कि मौत आखरीन भी आना कैसे है। तुम तो जानते हो कि मौत सामने खडा है। वो कहते है कि हम यहां पर बैठे ही बाम्ब छोडेंगेजहां भी गिरेगा सब कुछ खत्म हो जावेगा। किसी भी लश्कर आद की जरूरतप्लेन की जरूरत नही रहेगी। एक-2प्लेन भी करोडो ही खर्चा खा जाता है। कितना सोना सबके पास रहता है। वो सब समुन्द्र मे चला जावेगा। यह सारा रावण राज्य एक आयलेण्ड है। अणगिनत मनुष्य है। तुम बच्चे समझते हो कि हम तो अपना राज्य स्थापन कर रहे है। तो सर्विस मे ही बिजी रहना चाहिये। कहीं पर भी बाढ आद आ जाती है तो देखो कैसे सभी बिजी हो जाते है सभीको खाना आद दिवालाने मे। पानी आता है तो पहले से ही भागना शुरु करते है। तो विचार करो कि कैसे सब खत्म होगा। फिर क्या होगा। इनके तो आलराउन्ड समुन्द्र है। विनाश होगा तो जलमई हो जावेगा। पानी ही पानी। बुधी मे आना चाहिये कि जब हमारा राज्य था तो यह बाम्बे कराची आद तो थे नही। भारत कितना छोटा जाकर रहेगा। बहुत थोडे रहेंगे सोभी मीठे ही पानी पर। वहां पर तो कूंए आद की दरकार नही रहती है। पानी बुत ही अच्छा स्वच्छ होता है। नदियां मे गन्द आद कुछ नही होता है। वहां पर थोडे ही गगां मे किचडा होगा। नदियों पर तो खेल-पाल करते है। गन्दगी की कोई बात नही। नाम ही है स्वर्ग। नाम सुन कर ही दिल होती है कि जल्दी-2 पढ जावे बाप से पुरा वर्सा ले लेवे। पढ कर फिर औरो को भी पढावें। सबको ही पैगाम देवे। कल्प पहले जिन्होने वर्सा लिया है वो ही ले लेंगे। पुरुषार्थ करते रहते है। क्यो नही विचारे बाप को जानते है। बाप कहते है कि पवित्र बनो। जिनको तिरी पर बहिश्त मिलेगा वो क्यो नही पवित्र बनेंगे। बोलो कि क्यो नही हम एक जन्म पवित्र बनेंगे जो हमे विश्व की बादशाही मिलेगी। भगवानोवाच है कि अगर तुम इस अन्तिम जन्म मे पवित्र बनोंगे तो पवित्र दुनियां का मालिक बनोंगे। सिर्फ यही जन्म मेरी श्रीमत पर चलो। रक्षा बन्धन भी इसी की निशानी है। तो क्यो नही हम पवित्र रहे सकेंगे। बेहद का बाप गैरन्टी करते है बाप ने ही भारत को स्वर्ग का वर्सा दिया था नां। जिनको ही सुखधाम कहते है। अमृ भी बडी थी। अपार सुख थे। अभी तो अपार दुःख ही दुःख है यह है ही दुःखधाम। वो है सुखधाम। एक को ही पकड कर तुम ऐसे-2 समझाओ तो बाकी भी सब सुनते रहेंगे। योग मे रहेकर बताओ तो सभी को समय आद भी भूल जावे। कोई कुछ भी कह नही सके। 15-20 मिन्ट के बदले वो घण्टो भी सुनते रहे। परन्तु वो ताकत चाहिये। देहअभिमान नां होना चाहिये। है यहां तो सर्विस सर्विस करनी है। राजा बनना है तो प्रजा कहां बनाई है? ऐसे ही थोडे ही बाप पाग रख देंगे ठिक्कर की। प्रजा डबल सिरताज धारी बनती है क्या? बाप तो बच्चो को हिमथाते बहुत है। जब बच्चे करे भी। अच्छा ओम